शेमुषी

द्वितीयो भागः

दशमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

शेमुषी

द्वितीयो भागः

दशमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935

PD 5T ST

रु. 40.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा न्यू भारत ऑफसेट प्रिंटर्स, बी-16, सैक्टर-6, नोएडा 201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-642-X

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अशोक श्रीवास्तव*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*कल्याण बनर्जी*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*गौतम गांगुली*
मुख्य संपादक (संविदा सेवा)	:	*नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

आवरण
करन चढ्डा

चित्रांकन
अरूप गुप्ता एवं सुजीत सिंह

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय- ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक- समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु

वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभ-त्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं छात्राणां कृते पुस्तकमिदं उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

कृष्णकुमारः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

नव देहली
20 नवम्बर 2006

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

राधावल्लभ त्रिपाठी, *पूर्व अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली

सदस्य

अशोक कुमार शुक्ल, *टी.जी.टी.,* केन्द्रीय विद्यालय, ए.जी.सी.आर. कॉलोनी, दिल्ली

आदर्श आहूजा, *टी.जी.टी.,* डी.पी.एस., मथुरा रोड, नयी दिल्ली

आभा झा, *टी.जी.टी.,* सर्वोदय विद्यालय, आयानगर, नयी दिल्ली

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' (सेवानिवृत्त प्रोफेसर), *विभागाध्यक्ष,* पटना विश्वविद्यालय, पटना

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफेसर संस्कृत,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

केशरीनन्दन द्विवेदी, *टी.जी.टी.,* केन्द्रीय विद्यालय नं. 2, वायुसेना स्थल, तेजपुर, असम

निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी.,* केन्द्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. कैम्पस, नयी दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे, *प्रोफेसर,* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत,* भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

रमेश कुमार पाण्डेय, *अध्यक्ष,* शोध एवं प्रकाशन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफेसर हरिदत्त शर्मा, श्री ओमप्रकाश ठाकुर प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यसामग्री सङ्कलित की गई है।

परिषद् निगरानी समिति के सम्मान्य सदस्यों विशेषतः प्रो. शिवजी उपाध्याय तथा पुनरीक्षण समिति की सदस्य डॉ. पूर्वा भारद्वाज के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

प्रकाशन कार्य में सक्रिय सहयोग के लिए भाषा विभाग एवं *स्टेशन इंचार्ज,* परशराम कौशिक; सर्वेन्द्र कुमार एवं सतीश झा, *कॉपी एडीटर;* राजमङ्गल यादव, *प्रूफ रीडर* एवं कमलेश आर्या, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत की गणना विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में की जाती है। इसका साहित्यिक विस्तार वैदिक युग से लेकर आज तक अबाध रूप से चल रहा है। मानवीय चिंतन के सभी क्षेत्रों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। युग-परिवर्तन के साथ-साथ इसके आयाम भी बदलते रहे हैं। भाषा और साहित्य की व्यापकता को देखकर इसे देववाणी भी कहा जाता था जो इसके प्रति भारतीयों की श्रद्धा का परिचायक है।

संस्कृत का प्राचीन साहित्य जीवन-मूल्यों के प्रति (जैसे परोपकार, दान, सत्य, अहिंसा, राष्ट्र-भक्ति, पृथ्वी-प्रेम, सत्कर्म इत्यादि) आदर्श की स्थिति का आकलन करता है। इसका आधुनिक साहित्य प्राचीन मूल्यों के अतिरिक्त मानव की समकालीन समस्याओं और जीवन-संघर्षों को भी निरूपित करता है। अतः विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर आँकना ठीक नहीं कहा जा सकता है। यह गौरव का विषय है कि चार हजार वर्षों से भी अधिक संस्कृत साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्रायः प्रामाणिक रूप से होता रहा है।

संस्कृत का महत्त्व केवल प्राचीनता अथवा विषय-व्यापकता की दृष्टि से ही नहीं, अपितु देश के बहुभाषिक परिदृश्य में राष्ट्र की एकता के लिए भी सर्वोपरि है। भारत की अन्य भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण शब्द-संपत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं के समान भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में जिस प्रकार संस्कृत सहायक है, उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multilingualism) का संस्कृत सीखने में भी उपयोग हो सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य दो रूपों में (वैदिक तथा लौकिक) उपलब्ध है। वैदिक साहित्य संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् के रूप में है। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद** इन चारों को **संहिता** कहते हैं जिनमें यज्ञ तथा अन्य विषयों के मन्त्रों का संकलन है। इन मन्त्रों का उपयोग बताने के लिए कई ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये हैं। वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या **आरण्यक** में है, उपनिषद् वैदिक दर्शन का प्रौढ़ रूप है। वेदों को सही संदर्भ में समझने के लिए वेदाङ्ग बने जिनकी संख्या छह है - **शिक्षा** (उच्चारण-विज्ञान), **व्याकरण** (पद-विज्ञान), **छन्द** (पद्यात्मक मन्त्रों में छन्द व्यवस्था), **निरुक्त** (अर्थ-विज्ञान), **ज्योतिष** (काल तथा खगोल का विज्ञान) तथा **कल्प** (कर्मकाण्ड तथा आचार का शास्त्र)।

लौकिक संस्कृत का आरंभ आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण से हुआ जिसमें आदर्श महापुरुष राम का जीवन-चरित वर्णित है। इसमें वैदिक भाषा से परिष्कृत लौकिक काव्य-भाषा का प्रयोग है। यह सात काण्डों में विभक्त है जिन्हें सर्गों में विभक्त किया गया है। इसमें 24000 श्लोक हैं। एक अन्य प्रारम्भिक विशाल ग्रन्थ वेदव्यास-रचित **महाभारत** है जिसमें एक लाख श्लोक हैं। यह ग्रन्थ अट्ठारह पर्वों में विभक्त है। कौरवों और पाण्डवों के बीच हुआ महायुद्ध इसका मुख्य कथानक है जिसमें अन्याय पर न्याय की विजय हुई थी (यतो धर्मस्ततो जयः)। महाभारत में भारतीय जीवन-पद्धति के व्यापक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। यही कारण है कि इसे सर्वांगपूर्ण आचार- ग्रन्थ के रूप में माना गया है। लोकोक्ति है – **यन्न भारते तन्न भारते** (जो महाभारत में नहीं वह भारत में नहीं)। महाभारत के भीष्म पर्व में उल्लिखित भगवद्गीता अब एक प्रसिद्ध तथा स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है जिसमें युद्ध के आरम्भ में कृष्ण द्वारा अर्जुन को कर्मयोग का उपदेश दिया गया है। परवर्ती संस्कृत कवियों ने रामायण तथा महाभारत से कथानक लेकर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

प्राचीन भारत के धार्मिक तथा लौकिक विषयों का वर्णन पुराण साहित्य में मिलता है। मुख्य पुराण अट्ठारह हैं। पुराणों में राष्ट्रीय एकता का प्रयास मिलता है। तीर्थयात्रा, वनों, पर्वतों, और नदियों को श्रद्धेय दिखाकर पुराणों ने पर्यावरण एवं सांस्कृतिक एकता के महत्त्व का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय समाज को आदर्शोन्मुख करने में पुराणों का बहुत योगदान है।

तदनन्तर संस्कृत साहित्य के विविध रूपों का प्रस्फुटन एवं विकास होता है। एक ओर संस्कृत नाटकों की निरन्तर धारा चली तो दूसरी ओर गद्य-पद्य में रचे गए छोटे-बड़े काव्यों का प्रवाह मिलता है। यही परम्परा आज तक चल रही है। कुछ कवियों ने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं जैसे–संस्कृत के सबसे प्रसिद्ध कवि कालिदास ने दो महाकाव्य (रघुवंश, कुमारसंभव), दो गीतिकाव्य (ऋतुसंहार, मेघदूत) और तीन नाटक (अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र) लिखे।

प्राचीन नाटककारों में भास (13 नाटकों के रचयिता), शूद्रक, विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), हर्ष, भट्टनारायण, भवभूति आदि हैं। कुछ नाटककारों ने प्रहसन, भाण आदि लिखकर अपने काल के जन-जीवन के विकृत पक्ष का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया है। प्राचीन महाकवियों में अश्वघोष, भारवि, भट्टि, माघ, क्षेमेन्द्र, श्रीहर्ष आदि हैं। बिल्हण (विक्रमांकदेवचरित), कल्हण (राजतरंगिणी) आदि ने ऐतिहासिक महाकाव्य लिखे।

गीतिकाव्य या लघुकाव्य के लेखकों में भर्तृहरि (नीति, शृंगार और वैराग्य शतक), अमरुक (अमरुशतक), जयदेव (गीतगोविंद), जगन्नाथ (भामिनीविलास) प्रसिद्ध हैं। गद्यकाव्य के लेखकों में सुबन्धु, बाणभट्ट (हर्षचरित और कादम्बरी), दण्डी (दशकुमारचरित), अम्बिकादत्त व्यास (शिवराज विजय) आदि हैं।

संस्कृत वाङ्मय काव्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष तथा कोश आदि के हजारों ग्रन्थों की लम्बी परम्परा से भी समन्वित है। ये ग्रन्थ भारतीय विद्वानों की उपलब्धि अभिव्यक्त करते हैं।

प्रस्तुत संकलन : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यचर्या में निम्नांकित लक्ष्य रखे गए हैं–

- भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
- आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में शिक्षा की प्रस्तुति।
- शिक्षा को जीवन के परिवेश से जोड़ना।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार ।
- कण्ठाग्र करने की परम्परागत विधि से हटकर छात्रों को चिंतन के लिए प्रेरित करना।
- छात्रों की कल्पनाशीलता तथा रचनात्मकता का विकास।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए शेमुषी प्रथम भाग नामक पाठ्यपुस्तक के अनंतर दशम कक्षा के लिए यह शेमुषी द्वितीय भाग प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संकलन में संस्कृत को जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। इसीलिए इसमें आधुनिक संस्कृत रचनाओं के समावेश के साथ अन्य भाषाओं के साहित्य से अनूदित पाठों को भी ग्रहण किया गया है। पाठों के आरम्भ में पाठ-सन्दर्भ दिए गए हैं जिनसे पाठ-प्रसंगों को समझा जा सके। छात्रों को सीखने का अधिकाधिक अवसर मिल सके इसलिए पाठों के अन्त में विविध अभ्यासों वाली प्रश्नावली दी गयी है।

छात्र पाठों को स्वयमेव समझ सकें इसके लिए 'शब्दार्थाः' शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आए नवीन तथा कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिंदी में अर्थ दिए गए हैं। 'योग्यता-विस्तार' के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गई है जिससे छात्र ज्ञान के अग्रिम चरण की ओर सहज उन्मुख हो सकें। अध्यापकों के लिए पर्याप्त शिक्षण-संकेत दिए गए हैं ताकि निर्धारित पाठ्य बिंदुओं को ध्यान में रखकर अध्यापन कर सकें। पाठों को दृश्य विधि से स्पष्ट करने के लिए विषयानुकूल चित्र भी दिए गए हैं।

इस पुस्तक में कुल 12 पाठ रखे गए हैं। इनमें आठ पाठ प्राचीन ग्रन्थों से तथा चार पाठ आधुनिक मौलिक अथवा अनूदित संस्कृत रचनाओं से लिए गए हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में तीन प्रकार के पाठ हैं–

(क) संस्कृत की प्राचीन पुस्तकों से-गुणवती कन्या, शिशुलालनम्, व्यायामः सर्वदा पथ्यः, बुद्धिर्बलवती सदा, सुभाषितानि, प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्, अन्योक्तयः, जीवनं विभवं विना।

(ख) संस्कृत की आधुनिक मौलिक रचनाओं से-शुचिपर्यावरणम्, विचित्रः साक्षी।

(ग) अन्य भाषाओं से संस्कृत में अनूदित-भूकम्पविभीषिका, प्रश्नत्रयम्।

पाठ-सामग्री को यथासंभव मूल रूप में रखा गया है किन्तु छात्रों की सुविधा के लिए कहीं-कहीं उन्हें संपादित कर सरल बनाने का प्रयास किया गया है। संस्कृत साहित्य के जिन ग्रन्थों से ये पाठ-सामग्री ली गई है उनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. **दशकुमारचरितम्** – यह दक्षिण भारत के निवासी संस्कृत के प्रसिद्ध गद्यकार दण्डी की रचना है। इसमें दस मित्रों की कथाएँ हैं जिनका नायक राजवाहन है। सभी कुमार आकस्मिक रूप से बिछुड़ जाते हैं तथा मिलने पर राजवाहन को अपनी अनुभूत आश्चर्यजनक घटनाएँ सुनाते हैं। पूरा ग्रन्थ तीन खंडों में है-पूर्वपीठिका (5 उच्छ्वास), मूल भाग (8 उच्छ्वास) तथा उपसंहार।

2. **कुन्दमाला** – यह कथित रूप से दक्षिण भारतीय नाटककार दिङ्नागकृत नाटक है। इसमें राम द्वारा सीता के निर्वासन का करुण कथानक है। वाल्मीकि के तपोवन में नाटक के सभी छह अंकों का परिदृश्य है। सीता द्वारा गुँथी हुई कुन्द-पुष्पों की माला गंगा में प्रवाहित होती देखकर राम को सीता के विषय में जानकारी मिलती है कि वह कहीं आस-पास ही अपने दिन बिता रही है। नाटक में राम द्वारा अपने पुत्रों कुश-लव को पहचानने की कौतूहलवर्धक परिकल्पना है।

3. **सुश्रुतसंहिता** – यह आयुर्वेद का अत्यंत प्राचीन ग्रन्थ है जिसमें मुख्य रूप से शल्य कर्म (Surgery), विषचिकित्सा तथा स्वास्थ्य के नियमों का निरूपण है। यह छह खण्डों में विभक्त है, प्रत्येक खण्ड को अध्यायों में बाँटा गया है। खण्डों के नाम हैं-सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान तथा उत्तरतन्त्र। इसके लेखक सुश्रुत अपने समकालीन आचार्य चरक के समान विश्वविख्यात थे।

4. **शुकसप्तति** – यह संस्कृत कथा साहित्य की परवर्ती रचना है। इसमें एक सुग्गे (शुक-Parrot) के द्वारा एक अकेली स्त्री को मन लगाने के लिए रोचक कथाएँ कही गयी हैं। ये कथाएँ बुद्धिमत्तापूर्ण एवं मनोरंजक भी हैं। भारतीय आख्यान परम्परा में 'किस्सा तोता मैना' की कथाएँ प्रसिद्ध हैं। उनका एक रूप इस ग्रन्थ में मिलता है।

5. **मुद्राराक्षस** – यह विशाखदत्त रचित राजनीतिपरक नाटक है जिसमें चंद्रगुप्त मौर्य के शासन को चाणक्य द्वारा प्रतिष्ठापित करने का कथानक है। कूटनीतिज्ञ चाणक्य की बुद्धि से चंद्रगुप्त न केवल पाटलिपुत्र का राज्य पाता है अपितु एक योग्य मंत्री भी उसे मिलता है जिसका नाम राक्षस है। राक्षस को वश में करने में चाणक्य की कूटनीति काम आती है।

इस संकलन में तीन प्राचीन संस्कृत के पाठ (सुभाषितानि, अन्योक्तयः, जीवनं विभवं विना) विभिन्न ज्ञात-अज्ञात कवियों द्वारा रचित श्लोकों के संग्रह के रूप में हैं। ज्ञात कवियों में भर्तृहरि तथा जगन्नाथ हैं। भर्तृहरि ने तीन शतक ग्रंथों की रचना की–नीति, शृंङ्गार तथा वैराग्य शतक। इनमें **नीतिशतक** दैनिक जीवन के व्यवहार की नीतियों का सरस वर्णन करता है। जगन्नाथ 17वीं शताब्दी के कवि थे जिनका भामिनी-विलास कवि के स्फुट पद्यों का संकलन है। इसके चार भाग हैं– अन्योक्तिविलास,शृंङ्गारविलास, करुणविलास और शांतविलास। इसके प्रथम भाग में हंस, कमल, मधुकर, चंदन, मेघ, समुद्र आदि को लक्षित कर मानवों को उपदेश दिए गए हैं। बहुत से पद्यों के कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम नहीं मिलते। उन्हें सुभाषित संग्रहों में संकलित किया जाता रहा है।

आधुनिक संस्कृत लेखकों में 'शुचिपर्यावरणम्' के कवि प्रो. हरिदत्त शर्मा इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के वरिष्ठ आचार्य हैं। उनकी अनेक काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। 'प्रश्नत्रयम्' के मूल लेखक रूसी कथाकार लियो टाल्स्टाय हैं। इस कथा का संक्षिप्त संस्कृत रूपान्तर प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ने किया है जो संस्कृत के एक प्रतिष्ठित समीक्षक तथा लेखक हैं। 'विचित्रः साक्षी' के लेखक श्री ओमप्रकाश ठाकुर हैं जिन्होंने आधुनिक परिवेश की अनेक संस्कृत कथाएँ लिखी हैं। 'भूकम्प विभीषिका' आधुनिक युग का संकलित निबन्ध है जिसमें एक नैसर्गिक उत्पात का वर्णन है। संस्कृत भाषा में अभिव्यक्ति-क्षमता के विकास के लिए ऐसे विषयों के निबंधों की बड़ी भूमिका है।

अध्यापकों से निवेदन

संस्कृत के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को आधार के रूप में उपयोग करें। हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्ष होने के लिए छात्रों को उन्मुख करने का प्रयास करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का अधिकाधिक विकास हो सकेगा।

ध्यातव्य बिन्दवः

1. **शुचिपर्यावरणम्**–शिक्षक छात्रों के उच्चारण तथा सस्वर वाचन/गायन पर जोर दें।
2. **गुणवती कन्या**–कथा को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने के बाद पाठ का आरम्भ करें।
3. **शिशुलालनम्**–राम और कुश-लव के मिलन को पारिवारिक सन्दर्भ में प्रस्तुत कर पाठ को पढ़ाएँ। कुश-लव की सरलता तथा स्वाभिमान पर बल दें। राम के वात्सल्य का भी निरूपण करें। रंगमंच पर अभिनय द्वारा भी इसकी प्रस्तुति कराई जा सकती है।

4. **व्यायामः सर्वदा पथ्यः**– व्यायाम के लाभ को छात्रों को समझाएँ तथा इसके स्थायी प्रयोग पर बल देते हुए श्लोकों का सस्वर पाठ सिखाएँ।
5. **बुद्धिर्बलवती सदा**– बुद्धि और शारीरिक शक्ति का तारतम्य समझाएँ। कथा से मिलती-जुलती दूसरी घटनाओं का भी उल्लेख करें। इस कथा में रोचकता तथा उपदेश के बिन्दुओं को स्पष्ट करें।
6. **सुभाषितानि**– संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में सुभाषित पद्यों तथा वाक्यों का महत्त्व समझाएँ। श्लोकों का सस्वर वाचन सिखाएँ।
7. **भूकम्पविभीषिका**– प्राकृतिक उपद्रवों (जैसे-बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प) की अनिश्चितता बताकर इनसे बचने के उपायों पर बल दें। पाठ को छात्रों द्वारा वाचन का भी आग्रह करें। व्याकरण का भी अनुप्रयुक्त रूप से उपयोग सिखाएँ।
8. **प्रश्नत्रयम्**– टाल्स्टाय तथा गाँधी जी के समान विचारों के आलोक में इस कथा को पढ़ाएँ। वर्तमान काल की महत्ता बताएँ।
9. **प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्**– नाटकीय वाचन छात्रों द्वारा नाटक पढ़वाएँ, मित्र के महत्त्व पर संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं से उद्धरण दें, छात्रों से भी पूछें।
10. **अन्योक्तयः**– काव्य में अन्योक्ति का महत्त्व बताएँ। प्राकृतिक पदार्थों से मानव को सीखने के लिए उपयोगी भावों को प्रकाशित करें। श्लोकों का सस्वर वाचन सिखाएँ।
11. **विचित्रः साक्षी**– किसी विवादास्पद विषय के समाधान में साक्षी (गवाह witness) की आवश्यकता समझाते हुए कथा को रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। न्यायाधीश की बुद्धिमत्ता पर बल दें।
12. **जीवनं विभवं विना**– ग्राम्य जीवन की विपन्न स्थिति का वर्णन करें। संस्कृत कवियों की सूक्ष्म दृष्टि की चर्चा करें। यथार्थ के वर्णन के उद्देश्य (स्थिति में सुधार के उपाय) पर प्रकाश डालें।

छात्रों की सुगमता को ध्यान में रखकर प्रत्यक्ष, व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि के साथ-साथ कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें ताकि संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन सोपानों पर चलने के क्रम में रोचक तथा उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि परिषद् की अन्य संस्कृत पुस्तकों के समान इस संकलन (भाग-2) को भी छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसे और भी अधिक उपयोगी तथा स्तरीय बनाने के लिए हम अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेंगे।

विषयानुक्रमणिका

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को **:**

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।